eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 05, May 2023

भारत में डिजिटल शिक्षण तकनीक एक सूक्ष्म अध्ययन

[1]डॉ0 दिनेश कुमार
[1]असि0 प्रो0 अर्थशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय हरीपुर निहस्था, रायबरेली (उ0प्र0)

Abstract

शिक्षा पर सभी का बराबर अधिकार है, जो एक राष्ट्र के विकास पर बहुत बड़ा योगदान देती है। कोविड–19 के पश्चात शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन आये हैं। लॉकडाउन के दौरान विद्यार्थियों की शिक्षा प्रभावित न हो इसके लिए डिजिटल शिक्षा तकनीक का प्रयोग किया गया है, और हम काफी सफल भी हुए। ऑनलाइन शिक्ष के माध्यम से सुदूर बैठे देश के कोने–2 से विद्यार्थी घर पर ही बड़ी संख्या में एक साथ शिक्षा ग्रहण कर सकते है। परन्तु सभी विद्यार्थियों के पास अध्ययन के लिए डिजिटल साधन उपलब्ध नही है या फिर नेटवर्क सही नही रहता जिससे उनके लिए ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करना मुश्किल हो जाता है। भारत सरकार ऐसे पिछड़े छात्रों को डिजिटल शिक्षण के रास्ते में लाने के लिए प्रतिबद्ध है फिर चाहे वो मोबाइल, टैबलेट या लैपटॉप वितरण के माध्यम से हो। भारत सरकार द्वारा स्वयं, स्वयंप्रभा, राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी आदि के माध्यम से डिजिटल शिक्षण की पहल की गयी है, जिससे निश्चय ही विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में डिजिटल शिक्षण तकनीक के लाभ व इसकी चुनौतियों को व्यक्त करने कोशिश की गयी है।

मुख्य शब्द :– डिजिटल शिक्षण तकनीक, कोविड–19, ऑनलाइन अध्ययन, भारत सरकार।

Introduction

भारत में डिजिटल शिक्षा तकनीक और डिजिटल साधनों के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए अध्ययन तथा ज्ञान प्राप्त करने का एक रास्ता है। भारत में कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान कुछ समय के लिए शिक्षण व्यवस्था को बाधित कर दिया था। मार्च 2020 में पहले लॉकडाउन के पश्चात से भारत में तीव्र और नवप्रवर्तन के साथ महामारी का मुकाबला किया गया। विद्यार्थियों के भविष्य को सँवारने के दृष्टिकोण से भी उनकी शिक्षा बाधित न हो इसलिए इस क्षेत्र में वर्तमान डिजिटल तकनीक का लाभ उठाया गया। डिजिटल शिक्षण तकनीक अपने आप में रोचक तथा लागत को बचाने वाली है, इसमें विद्यार्थी वर्ग घर पर रहकर ही सरलता से अपनी पढ़ाई को जारी रख सकते है। इतना ही नही प्रस्तुत तकनीक के माध्यम से सुदूर बैठे एक साथ बड़ी संख्या में विद्यार्थी वर्ग अध्ययन का लाभ उठाते हैं। इस क्षेत्र में जूम, गुगल मीट, टेलीग्राम आदि ऐप्स ने अपनी प्रभावशाली भूमिका निभाते है, इनके माध्यम से पढ़ना–लिखना बिल्कुल कक्षा जैसा महसूस होता है।

परिकल्पना :–

1. भारत में डिजिटल शिक्षण तकनीक निश्चय ही छात्र/छात्राओं के लिये उपयोगी है।
2. डिजिटल शिक्षण तकनीक का बढ़ावा ग्रामीण/पिछड़े क्षेत्रों के छात्र/छात्राओं के अध्ययन में बड़ी बाधा है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 05, May 2023

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. वैश्विक महामारी कोविड–19 ने विद्यार्थियों की स्कूली शिक्षा प्रणाली को कुछ समय के लिए बाधित कर दिया था।
2. कोविड–19 के अन्तर्गत विद्यार्थियों की शिक्षा प्रणाली को अनवरत बनाने के लिए ऑनलाइन शिक्षण एक बेहतर तकनीक है।
3. डिजिटल शिक्षण के माध्यम से बड़ी संख्या में विद्यार्थी एक साथ शिक्षा प्राप्त कर सकते है।
4. डिजिटल शिक्षण तकनीक छात्र/छात्राओं के लिए रोचक एवं सुविधाजनक है।
5. ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी सक्रिय रहकर व्यक्तिगत रूप से अपने ज्ञान एवं कुशलता का स्वयं निर्माण करता है। परिणम स्वरूप व स्वयं करके सीखता है।

साहित्य समीक्षा :– यहाँ पर ऑनलाइन शिक्षण से सम्बन्धित बहुत सारे अध्ययन है जिनमें से कुछ इस प्रकार है–

- खान (1997) अपने अध्ययन में बताते है कि ऑनलाइन शिक्षा श्रोता तथा निर्देश वितरण के बीच दूरी की मध्यस्थता करती है।
- डॉ0 स्टीवेन, स्टैक (2015) ने अपने अध्ययन में बताया कि ऑनलाइन शिक्षा तथा आमने–सामने की शिक्षा दोनों में कोई विशेष अन्तर नही है।
- डॉ0 एन. फहाद तथा अली–फहाद ने अपने अध्ययन में महाविद्यालयों के 186 विद्यार्थियों के बारे में बताया कि वे मोबाइल द्वारा पढ़ते है। उनका शोध बताता है कि विद्यार्थी मोबाइल तकनीक को संचार और अपनी कुशलता को बढ़ाने का प्रभावी साधन समझते है।

इस प्रकार साहित्य समीक्षा के अन्तर्गत उपरोक्त अध्ययनों से हमें पता चलता है कि निश्चय ही ऑनलाइन शिक्षण विद्यार्थियों के लिए प्रभावपूर्ण एवं सरल है लेकिन आमने सामने की कक्षाओं के महत्व को कम नही आँका जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में यह बताते की कोशिश की गयी है कि डिजिटल शिक्षण सरल एवं महत्वपूर्ण है लेकिन उन्ही विद्यार्थियों के लिए जो इन साधनों को सहज रूप से प्रयोग कर सकते हैं।

शोध विधि :– प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण के आलोक में विभिन्न पुस्तकें, शोध पत्र, तथा वेबसाइट श्रोत में प्रकाशित द्वितीय आँकड़ों का प्रयोग किया गया है।

भारत में डिजिटल शिक्षा :– डिजिटल शिक्षा एक ऐसी तकनीक या अध्ययन की विधि है जिसमें शिक्षक या विद्यार्थी वर्ग डिजिटल उपकरणों जैसे – टी0वी0, मोबाइल, कम्प्यूटर, टैबलेट, लैपटॉप, प्रोजेक्टर, रेडियो आदि के माध्यम से अध्ययन करते है। यह ऐसी तकनीक है जो किसी भी छात्र को ज्ञानार्जन के लिए देश–विदेश कही से भी जानकारी प्राप्त करने में सहायता करेगा। लोग ऐसा भी मानते है कि भारत में डिजिटल शिक्षा और अध्ययन का भविष्य है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करने के लिए भारत सरकार द्वारा व्यापक श्रोत्रों तथा चैनलों को विकसित तथा परिभाषित

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 05, May 2023

किया गया है। कोई भी व्यक्ति भारत सरकार द्वारा शुरू किये गये डिजिटल इण्डिया अभियान के लाभ, उद्देश्यों तथा चुनौतियों को भी जान सकते है।[2]

Source :- https://news.cgtn.com/news/2020-10-10/Overcoming-the-digital-divide-in-online-education

उच्च शिक्षा में भारत सरकार की पहल :– उच्च शिक्षा क्षेत्र में भारत सरकार की डिजिटल पहल को कुछ निम्न बिन्दुओं से समझ सकते है।

- **स्वयं (SWAYAM) :-** स्वयं (स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पाइरिंग माइन्ड्स) को मानव समाधन विकास मंत्रालय (एम.एच.आर.डी) द्वारा 09 जुलाई 2017 को लॉंच किया गया, इसका उद्देश्य लाखों विद्यार्थियों को ई लर्निंग कोर्सेस के अन्तर्गत गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा को मुहैया करवाना है।[3]
- **स्वयं प्रभा :–** स्वयं प्रभा भारत सरकार द्वारा 07 जुलाई 2017 को लॉंच किया गया था। यह डी.टी.एच. चैनलों का एक समूह है जो पूरे सप्ताह 24 घण्टे गुणवत्ता पूर्ण शैक्षिक कार्यक्रमों को फ्री डिश टीवी में प्रसारित करता है।[4]
- **राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (एन.डी.एल) :–** सूचना एवं संचार तकनीक (एन.एम.ई.आर.सी.टी.) के तत्वावधान में भारतीय राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी (एन.डी.एल.आई.) एम.एच.आर.डी. की एक परियोजना है। जिसका उद्देश्य भारतीय नागरिकों को डिजिटल शिक्षण संसाधन मुहैया कराना है। जिसमें पाठ्य पुस्तक, निबंध, वीडियों–आडियो पुस्तके, व्याख्यान, उपन्यास आदि शिक्षण सामग्री शामिल है।[5]

भारत सरकार की उपरोक्त पहल के अतिरिक्त राष्ट्रीय शैक्षणिक डिपॉजिटरी (एन.ए.डी), ई शोध सिंधु (ई.एस.एस.), वर्चुअल लैब्स, ई यंत्र, एक शिक्षक कार्यक्रम से बात करें, ई–आचार्य, ई–कल्प, एफ.ओ.एस.एस.ई.ई, (शिक्षा में मुफ्त/लिवर और ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर), विद्वान, स्पोकन ट्यूटोरियल, बादल, शैक्षणिक, नेटवर्क की वैश्विक पहल (डीआईएएन), राष्ट्रीय संस्थागत रैकिंग ढ़ाँचा (एन.आई.आर.एफ.), साक्षात : एक वन स्टॉप एजूकेशन पोर्टल, डिजिलॉकर, शोध गंगोत्री, वर्चुअल लर्निंग, एनवायरनमेंट, एस.ओ.एस. उपकरण ई पी जी पाठशाला आदि शामिल है।[6]

भारत में डिजिटल शिक्षा की चुनौतियाँ :– देश का शिक्षा क्षेत्र एक क्रान्ति के दौर से गुजर रहा है, जिसका पूर्णतः श्रेय तीव्र गति से इण्टरनेट पहुँच तथा कम कीमत वाले मोबाइल और हाथ द्वारा संचालित उपकरणों की उपलब्धता को जाता है। सभी को आगे निकलने की होड़ सी लगी है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 05, May 2023

सवाल यह भी है कि क्या भारत के सभी विद्यार्थी इस डिजिटल तकनीक को उचित रूप से फायदा उठाने में सक्षम है अथवा नहीं? क्योंकि भारत को गाँवों का देश कहा जाता है और गाँवों में अभी भी बहुत सारे तबके ऐसे भी है जो डिजिटल इण्डिया की पहुँच से बाहर है। ऐसे विद्यार्थियों का भविष्य संकटग्रस्त हो सकता है। इन्हें निम्न बिन्दुओं से देख सकते है।

- कोविड–19 महामारी से पहले भारत के अधिकांश शिक्षण संस्थानों को डिजिटल शिक्षा का कोई विशेष अनुभव नही रहा ऐसे शिक्षण संस्थानों को ऑनलाइन शिक्षण में लाना एक बड़ी चुनौती है।
- वर्तमान समय डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी है, बहुत सारे विद्यार्थियों के पास डिजिटल साधनों की कमी है ऐसे में उनका ऑनलाइन कक्षाओं से जुडना एवं बहुत बड़ी समस्या है।
- देश के अधिकांश शिक्षण तकनीकी रूप से प्रशिक्षित नही है, ऐसे में उनका ऑनलाइन शिक्षण कार्य बहुत मुश्किल है।
- नई शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों को क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षण देने की व्यावस्था की गई है, लेकिन इंटरनेट में सभी भाषाओं में अध्ययन सामग्री मिलना मुश्किल है।
- बहुत सारे विषयों में छात्रों को व्यावहारिक शिक्षा की जरूरत होती है जो कि केवल ऑफलाइन शिक्षा से दिया जा सकता है। ऑनलाइन से नहीं।[7]

निष्कर्ष एवं सुझाव :– प्रस्तुत शोध पत्र के अन्तर्गत हम कह सकते है कि निश्चय ही भारत की डिजिटल शिक्षण तकनीक एक क्रान्ति के रूप में है जिसके बहुत सारे लाभ हैं और अभी इस क्षेत्र में जमीनी स्तर हमें बहुत दूर तक जाना है। इस क्षेत्र में भारत सरकार की हर पहल (मोबाइल, टैबलेट, ई–चैनल आदि) सराहनीय है। परन्तु जो छात्र ऑनलाइन शिक्षा को ग्रहण करने में असमर्थ है उनके लिए निःशुल्क ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था की आवश्यकता है ताकि कोई भी विद्यार्थी शिक्षा से वंचित न रहे। डिजिटल शिक्षा बहुत अच्छा माध्यम है। जहाँ विद्यार्थियों को अध्ययन करना चाहिए।

सन्दर्भ :–

* Source-1. https://byjus.com>free-ias-prep>d…
* Source-2. https://hindi.careerindia.com>what…
* Source-3. https://testbook.com>ias-preparation
* Source-4. https://pmevidya.education.gov.in>…
* Source-5. https://gshindi.com>pib>national-…
* Source-6. https://lisportal.com>lis-blogss>3…
* Source-7. https:/www.drishtiias.com>hindi